Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 17 vad 11 30 uoEcj] 2017 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

दीनबन्धु सर छोटूराम

(24 नवंबर 1881–09 जनवरी 1945)

जन्म दिवस पर विशेष

दीनबन्धु जी का जीवन यात्रा उनकी सदा आदर्श रही एक कविता से शुरू होती है :-

''जब तक न हो सऊल, नींद चैन को त्यागों तुम,
संघर्ष का मैदान छोड मत भागो तुम
कुछ किए बिना जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।''

इसी मूलमंत्र के साथ उन्होंने बचपन में ही कुछ कर गुजरने की ठान ली और फिर कभी मैदान छोड कर नहीं भागे। हर मुश्किल से मुश्किल घडी को एक चुनौती समझा और संघर्ष से पार पाया। दीनबन्धु ने जो कहा वह कर दिखाया। वे कुदरत के उपासक थे - किसान की मेहनत इबादत, असफलता, सफलता सब कुछ कुदरत पर ही मुन्नसर हैं, लेकिन फिर भी किसान अपनी मेहनत को जारी रखता है और सदियों से संघर्षरत है।

आखिर जनता को अन्नदाता की बेदना को समझना और स्वीकारना ही होगा, इसकी आधारशिला सर छोटूराम ने अपने जीवनकाल में ही रख दी थी। सर्वप्रथम उन्होंने किसान के मर्ज को छूआ और साहूकार के पंजे से मुक्ति दिलाई। किसान की रहन की गई कृषि भूमि उसे वापिस दिलाई तथा अनेकों एकट पारित करवाकर अन्नदाता को राहत पहुंचाने की कथा लिखी। उस वकत बार-बार अकाल पडते थे - किसान को तरकावी ऋण दिए जाते थे। उन्होंने भाखडा डैम की रूप रेखा तैयार की ओर इसमें आने वाली बाधाओं को दूर किया। महाराजा बिलासपुर के साथ लेना उन्हीं की बपौती थी। ऐसे अनेकों कृषि सुधारों से किसान के खेत को पानी इत्यादि की सुविधाएं उपलब्ध हो सकीं। इसमें कोई अतिश्योकित नहीं कि उनके बाद के किसान नेता चौधरी चरण सिंह और चौधरी देवी लाल की भूमिका को कम नहीं आंका जा सकता, लेकिन इसका मार्ग दर्शन उन्हीं का ही था। विडंबना यही है कि आज भी कोई खेती करना और पशु पालना नहीं चाहता, कयोंकि यह आज भी घाटे का व्यवसाय है - 40 प्रतिशत किसान खेती छोड शहर चले गए और मजदूरी करने को मजबूर हैं अन्यथा कर्ज-मर्ज-गर्ज की चककी में पिसता हुआ आत्महत्या करने को मजबूर है।

दीनबन्धु ने अपने जीवनकाल में उसके मर्म को समझा और उसके जखमों पर मरहम लगाने का प्रयास किया। किसान को बेटे-बेटी की शिक्षा पर बल दिया, ताकि शिक्षा से वे उत्तम खेती की ओर अग्रसर हो सके, कृषि में विविधता लाए और आमदन में बढौतरी के साधन तलास करे। कृषि के साथ-साथ पशुपालन, मधु मकखी पालन, मुर्गी पालन तथा फसलों में कैश फसलों का चयन और आधुनिक ज्ञान अपनाने जैसी अनेकों योजनाओं की एक रूपरेखा उन्होंने तैयार कर दी।

दीनबन्धु किसी जाति-पाति या वर्ग विशेष के नहीं थे अपितु मानवता के पुजारी थे। उन्होंने खेती किसानी को बढावा देकर मानवता पर उपकार किया। वे एक पूर्ण संस्था थे। एक ही वकत में वे वकील, शिक्षा विद, राजनेता और किसान थे। उन्होने अपनी तन्खाह से किसान कोष और शिक्षा कोष शुरू किए ताकि लोगों को जागृत किया जा सके और दबे कुचले तबके के लोग आगे बढ सकें। परिणिति छुपी नहीं है-पाकिस्तान का एक मात्र नोबल पुरस्कार विजेता अबदुस कलाम उन्ही के कोष से पढ़ा और उसने अपने पुरस्कार पर कहा भी था कि 'अगर छोटू राम ना होते तो अबदुस कलाम इस मुकाम पर ना होते' । अतः पाकिस्तान में आज भी दीनबन्धु

'k"k i t&2 ij

दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह 21.01.2018

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटूराम की 137वीं जयंती के शुभ अवसर पर समारोह का आयोजन 21 जनवरी, 2018 को दीनबंधु सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–27, चण्डीगढ़ में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं, खेलों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर मैकिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2017 से दिसंबर 2017 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। अतः वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम तथा सेवानिवृत्त का महीना व दूरभाष नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 15 दिसम्बर, 2017 तक सूचित करें। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो 80 वर्ष पूरा कर चुके है उन्हें भी सम्मानित किया जायेगा। अतः वे भी अपना पूरा नाम व पता 15 दिसम्बर तक सूचित करें। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 15 दिसम्बर, 2016 तक भेजें। इस समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

शेष पेज–1

सर छोटूराम के नाम की ज्योत प्रज्ज्वलित रहती है और उन्हें रहबरे आजम की उपाधि दी गई। वे सदैव पुकारते थे 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' इसलिये उनकों बडे स्नेह व इज्जत के साथ छोटूखान के नाम से भी समबोधित करते थे। जाट स्कूल रोहतक के प्रिंसिपल एक बंगाली श्री सान्याल को लगाया, बाद में उन्हें कॉलेज का प्रिंसिपल बनाकर मैरिट को बढावा दिया।

उनके पदचिन्हों का अनुसरण करने से ही समाज में व्याप्त अंधकार को काटा जा सकता है। उस महान आत्मा को जाति-पाति, धर्म, राष्ट्र के बंधनों से मुक्त कर देखा जाए तो आज भी किसान, कामगार और काश्तकारों का कल्याण हो सकता है । भाई भतिजावाद की कुप्रथा से छुटकारा मिलेगा। आज हम आर्गेनिक खेती की बात करते हैं जो वे दशकों पूर्व कह गए। स्त्री शिक्षा पर बल दे गए। बेटी बचाओ का संदेश अपने जीवन पर ढाल गए। संतान के नाम पर उनकी स्वयं की केवल दो बेटियां थी और कभी भी बेटे की लालसा नहीं कि और कहते थे कि समस्त प्रदेश की बेटियां ही मेरे बेटे है। आज स्वच्छ भारत एक नारा हो सकता है। सर छोटू राम का जीवन सरल सीधी और प्रेरणादायक है, था और रहेगा। किसान एक बेजुबान प्राणी है जिसे मेहनत करनी आती है। अपना हक मांगना नहीं बेजुबान से जुबानें बने।

उनका कथन था कि, ''भगवान इतना दीजिए, घट-घट रहे समाए, मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए''। लेकिन कृषक समाज इससे भी अधिक दयालू है। खुद भूखा रहकर मानव सेवा में जुटा है। इस समाज की विडंबना है कि इसे बोलते वक्त, वक्त की नजाकत समझ में नहीं आती और दुश्मन की पहचान नहीं कर पाता। इसीलिए इस समाज का कोई वाली-वारिस नहीं रहा लेकिन दीन बंधू सर छोटू राम इनके मरहम को जानते पहचानते थे। उन्होने अपनी मृदुल एवं कुटिल भाषा से इस समाज से बेरोजगारी दूरी करने की सोची और दूसरे महायुद्ध के समय उन्होने आह्वान किया था - ''भर्ती हो जा रे रंगरूट, यहां मिलै तनै टूटे जूते, उड़ै मिलेगें बूंट।'' समाज उनके दर्शाए मार्ग पर चलकर आगे तो बढ़ा लेकिन जो प्रगति कर गया उसने समाज से नाता तोड़ लिया। इसी लिए आज भी सब से अधिक पीड़ा इसी समाज के हिस्से आ रही है। आज समाज सर छोटू राम का स्मरण कर उस मार्ग दर्शक की तलाश में है ताकि समाज में जन चेतना आ सके। दीनबंधू का मानना था कि किसान अजन्मे रिश्ते निभाना जानता है।

सत्ता विहिन दल आज स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू करने के लिए आधारहीन बयानबाजी करते हैं। स्मरण रहे कि इस रिपोर्ट के अनुसार किसान के उत्पाद की कम से कम कीमत तय करने में लागत मुल्य के साथ-साथ पचास प्रतिशत लाभ देने की बजाहत की गई है लेकिन ऐसा करेगा कौन ? अभी तक एम एस पी तय करने का कोई मान्य फार्मूला नहीं है तथा गेंहू, चावल के इलावा दूसरी फसलों पर वह भी नहीं है। हां, सर छोटू राम जैसे कदावर किसान नेता की यह समाज राह देख रहा है कि वह इस रिपोर्ट को लागू करवा सके। नई सोच नई तकनीक को अपनाकर ही समाज अपनी जरूरतें पूरी कर सकता है, इसी में सबका भला होगा। हमारी खेती और घरेलू जरूरतों के लिए बिजली पानी दोनों की व्यवस्था दीनबन्धु द्वारा योजनाबद्ध तरीके से बनाई गई भाखडा डैम से पूरी की जा रही है। वे कहते थे ''काम करो कि पहचान बन जाए - कदम चलो कि निशान बन जाए, लोग जिंदगी काट लेते हैं, ऐसे जीयो कि मिशाल बन जाए'' अतः उनका जीवन एक मिशाल बन गया। दीनबंधु कहते थे कि ''जो झुकता है वहीं पाता है, बाल्टी झुकती है भरकर निकलती है'' । बढते चलो काफिला बनता जाएगा। वे चाणक्य से मुतासिर थे कि काम की पहचान स्वतः बनती है वे किसान को एकजुट करने के लिए जीवन दर्शन दिखाते थे और कहते थे ''हिममतें मर्दा-मदद दे खुदा''। किसान को अच्छा जीवन, कपड़े या जूते कभी म्यंसर नहीं होते। इस दर्द को बयां करते हुए उन्होने कहा था - ''जिस खेत से म्यंसर ना हो दो जून की रोटी, उस खेत के -गोसा-ए-गंदम को जला दो''। हालांकि उसकी साल भर की कमाई को जलाने की उनकी कभी मंशा ना थी बल्कि उसे फसल का उचित मूल्य दिलवाना ही उनका ध्येय था। किसान हितैषी होने का प्रमाण उन्होंने अपना जन्मदिवस वास्तविक 24 नवंबर को ना मनाकर 'बसंन्त पंचमी' को मनाने से सिद्ध कर दिया। कयोंकि इस वकत किसान अपने खेत में खिली सरसों की तरह ही खुश होता है।

किसान की फसल का पैसा भी किसी बहाने देरी से दिया जाता है यानि किसान का ही पैसा उसके ब्याज पर मिलता है - उस पर भी जरूरी नहीं कि खाद, बीज, दवाई नकली नहीं हैं। यहां फिर किसान तेहरी मार खाता है एक तो खरीद कीमत ही लागत कीमत से तय होती है, दूसरा भुगतान में देरी, तीसरा उसी के पैसे को ऋण के रूप में तथा इसी से उसकी आगामी फसल की खरीद दावेदारी भी निराचित हो जाती है और फसल खरीद में भी धंधली होती है। कभी अनाज की बहुतायत, कभी कमी, कभी फसल खरीद साफ नहीं, उस पर भी मण्डी फीस, झरना, भराई, तुलाई और देरी में चोरी सब का वजन किसान ही झेलता है। कई फसलों की तो लागत को छोड उसकी कटाई, निराई, खुदाई की कीमत भी पूरी नहीं होती। किसान की फसल सडकों पर ही ढेरी कर दी गई, लेकिन योजनाकारों और सरकारों के सर कभी जूं नही रेंगी। सर छोटूराम कें प्रयासों से ही 'काणी ढंडी, काणी बांट' की प्रथा दूर हो सकी। (इसमें किसान ऋण के समय सवामण अनाज लेकर एक मण लिखा जाता था तथा वसूली के समय फिर सवा मण वसूल कर एक मण चुकता होता था) किसान आज फिर दीनबंधु को पुकार रहा है कि पुनः अवतार लो और हमें कुप्रथाओं से निजात दिलवाओं।

वें सदा कहते थे कि ''मैं किसान कौम को अपने हृदय की गहराईयों से प्यार करता हूं, परन्तु मुझे जानकर गहरा दुख हुआ कि उच्च पदों पर विराजमान जाट कौम के कुछ लोग कथित रूप में शराब के व्यसन में फंस गए हैं और अवैध रूप में भेंट स्वीकार करते हैं। यदि इनमें सचाई हैं, तो दोष पूरी कौम की बदनामी का कारण बनेगा। मैं चाहता हूं कि जाट सर्वाधिक नफरी में सरकारी नौकरियों में आए, परन्तु कोई ऐसी संस्था हो जो उन्हें राहे-रास्ते पर रखें'' शराब एक ऐसा व्यसन है, जो कई साम्राज्यों

के पतन का कारण बनी, कोई धर्म मदिरापान को उचित नहीं मानता, कोई ग्रन्थ समर्थन नहीं करता, अन्य जन इसकी निंदा करता है। अनुभव इससे भी कडवा हैं, इसें व्यसन से व्यकित बुरी आदतों की जडकन में घसता चला जाता है, चरित्र में गिरावट आती है। इन्द्रियों को तृप्त करने से कभी तृप्ती नहीं होती, केवल आत्म संयम से ही व्यकित चरित्रवान बनता है। घूस लेने वाले नहीं जानते हैं कि घूस देने वाला इतना सामर्थ भी है, जिसको विवश कर घूस वसूली जा रही है। उसके बच्चों को पेट भरने तक के साधन नहीं होते। अकसर रिश्वत ऐसे लोगों से ही ली जाती है। हम इतने पत्थर दिल और निर्दयी हो गए है कि तथ्यों से मूह मोड लें। जब प्रबुद्ध एवं शिक्षित लोगों की सभाओं में सुनता हूं कि जाट अधिकारी भी इन बिमारियों से ग्रस्त है तो मैं शर्म से सिर नीचा कर लेता हूं। हमें सदा अनुकरण करना चाहिये कि सादा जीवन, उच्च विचार, चरित्र में महानता, ईमानदारी और परस्पर मिलकर संघर्ष करना चाहिये।

इतिहास गवा है कि अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने - 'लांग हट' से 'व्हाइट हाउस' पहुंचते ही दास प्रथा का अन्त किया था। अगर अब्राहम लिकंन सिंहासन पर एक संत था, तो चौधरी छोटूराम सडकों का एक राजा था। उनका जीवन सदा निश्काम सेवा में लगा रहा। उन्होंने अपने जीवनभर की साधना को परहित में वार दिया था, अपनी सब इच्छा-अकांक्षाओं को मार, सुख-सुविधाओं को त्याग एक उदेश्य की आपूर्ति में लगे रहे। उनकी कलम की चोट से शोषकदल धराशयी हो गया, करोडों शोषित-दलित तथा बेचारगी का जीवन जीने वाले आर्थिक गुलामी से मुकत हो गए - परिणाम उनके जीवन काल में ही दिखने लगे। उनका विरोध भी डटकर हुआ। साहूकार परिवारों ने रोष रैलियां निकाली, उनकी अर्थियां तक फूकी गई और नारे लगे - 'ऐ की होा, छोटू मोआ' लेकिन वे कभी विचलित नहीं हुये और अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर ही माने। आमजन कह उठा :-

'हर मुकाम से आगे मुकाम तेरा, हयाते जौके-सफ्र के सिवा कुछ नहीं।।'

उनका मानना था कि हम 'पक्षियों की तरह उडना सीख गए हैं, मछली की तरह तैरना सीख गए हैं, लेकिन इंसान बनकर रहना कब सीखेगें।'

आज किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बिमारी के बचाव हेतू केन्द्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटूराम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढाकर सर छोटूराम को सच्ची श्रद्धाजंलि दी जा सकती है। इस कोष से किसान-मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ-साथ आज कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अंखडता व प्रभुसता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीनबंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनके ग्रामीण समाज, किसान कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का स्वप्न साकार हो सके।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

बेटियां 'छेडछाड की जलालत' से कब मुक्त होंगी ?

– डॉ ज्ञान प्रकाश पिलिनिया

यह घोर विंड़म्बना है कि बनारस हिंदु विश्वविद्यालय की छात्राओं ने मांगी सुरक्षा और मिले पुलिस लांठिया के निर्गम प्रहार। उनकी गुहार केवल इतनी ही थी 'बेटी बचाओ–बेटी को सुरक्षति माहौल में पढाओं। प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र वाराणसी के बनारस हिंदु विश्वविद्यालय में 23.09.2017 की रात पुलिस ने छात्राओं पर लाठियां बरसाई। इन छात्राओं का कसुर यह था कि ये विश्वविद्यालय परिसर में आए दिन होने वाली छेड़छाड़ का विरोध कर रहीं थीं। 24. 09.2017. को छात्राओं पर फिर लाठीचार्ज हुआ जिसमें कुछ छात्राएं घायल हो गई। ये सब हो रहा था नवरात्रि पर्व के मौके पर। यह पर्व बेटियां के पूजन का है। उन्हें शक्तिशाली बनाने का है, ताकि पुरूष प्रधान समाज में अपने हक के लिए उन्हें याचक ना बनना पड़े।

आखिर, पुलिस के दम पर कैम्पस खाली करा लिया गया। 'छेड़छाड़' के खिलाफ सुरक्षा के वाजिब सवाल पर छात्राओं के आन्दोलन के ऐसे कि वीसी सुरक्षा का आसवासन दें। लड़कियां दो दिन और दो रात सड़क पर थी, लेकिन वीसी नहीं आए। ऐसी परिस्थितियां ही क्यो आने दी गई कि छात्राओं को सड़क पर उतरना पड़ा ? यह सवाल भी है कि क्या प्रधानमंत्री के वाराणसी दौरे के समय शुरू हुए छात्राओं के आन्दोलन को समय रहते खत्म नहीं कराया जा सकता था ? वे सुरक्षा की वाजिब सी मांग को लेकर धरने पर बैठी थी। ड़नकी मांगो में रात को सुरक्षा अधिकारी की नियुक्ती छेड़छाड़ की घटनाओं पर रोक, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था की मांग, सीसीटीवी कैमरों की मांग और आपतिजनक हरकतों पर कड़ी कार्यवाही जैसी बुनियादी मांगे शामिल थी। बीएचयु में एक अरसे मध्ययुगीन आचरण चल रहा था। वे क्या खाएं क्या पहने इन सबका निर्धारण एक तरह हैं। महिला छात्रावास एक तरह से जेल बने हुए हैं। इसी तरह आए दिन होने वाले छेड़छाड़ ही इस आदोंलन का कारण है। 'बेठी–बचाओं, बेटी–पढाओं – का नारा देने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में दो दिनों के प्रवास पर

अमृत और मृत्यु दोनों ही इस शरीर में स्थित हैं। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है। –वेद व्यास

थे जब आंदोलन छात्राएं पुरूष पुलिस के हाथों लाठियां खा रही थीं मुनासिब तो यह था कि मुल्क के प्रधानमुत्री आंदोलन कर रही छात्राओं से मिलते और ड़नका दर्द समस्याएं सुनते और उन्हें विश्वविद्यालय अकेला परिसर नहीं हैं जहां छात्राओं को छेड़छाड़ का शिकार होना पड़ता हो। हर राज्य के हर विश्वविद्यालय, स्कूल–कॉलेज और स्कूलों की यही कहानी है। छेड़छाड़ रोकने के कहीं भी पुख्ता बंदोबस्त नहीं है। स्कूल से विश्वविद्यालय तक, छात्राओं का, सरेआम समारोह, सरोरह चीर हरण होता है। उन्हें रोजाना, 'छेड़खानी की जलालत' सहनी पड़ती है। यह प्रश्न है कि बेटियों को सुरक्षा कब मिलेगी ? बीएचयू में पढने वाली छात्राओं को लम्बे समय से शिकायत थी कि उनके साथ छेड़छाड़ होती है। इसकी शिकायत विश्वविद्यालय प्रशासन से कि गई है तो जवाब मिला कि रात में या बेतुके टाइम पर निकलती ही क्यों हो? विश्वविद्यालय के कुलपति जीसी त्रिपाठी खुद छात्राओं के लिए फरमान जारी कर चुके थे महिला छात्रावासों में रात में वाईफाई, नहीं चलेगा, मेस में मांसाहारी नहीं पकेगा, शाम ड़लने के बाद बाहर निकलना नहीं होगा, छोटे कपड़े नहीं पहने जाएंगे और देर रात तक जागने वाली लड़कियां अनैतिक समझी जाएंगी। उन्मुक्त सोच का प्रतीक, विधामंदिर का परिसर, एक जेल बन गया, हां छात्राओं की आजादी पर पहरे लग गए।

विश्वविद्यालय की एक छात्रा ने विश्वविद्यालय प्रशासन के ऐसे अपमानजनक रवैयो और छेड़खानी के विरोध में पिछले एक महीने से अपना सिर मुंड़वा लिया था। 21.09.2017 को एक छात्रा देर शाम जब अपने हॉस्टल जा रही थी तो कुछ युवकों ने उसके साथ न केवल छेड़खानी की, बल्कि शोहदों ने उसके कुर्ता में हाथ ड़ाला था। जिसके बाद इस विरोध प्रदर्शन की शुरूआत हुई थी। कैंपस का हाल सुनकर शर्म आती है। आज आलम यह है कि लंफगे महिला छात्रावासों की खिड़कियां के सामने अश्लील हरकरतें करते है और जिसने लड़कियों का कैंपस में चलना–फिरना मुहाल कर दिया है। आंदोलनरत छात्राएं कुलपति जी त्रिपाठी से मिलना चाहती थी, लेकिन कूलपति की जगह आंदोलनकारी छात्राओं को काबू में करने के लिए पुलिस बल तैनात किया गया और पुरूष सिपाहियों ने छात्राओं पर बेरहमी से लाठियां बरसायी। आखिर, प्रधानमंत्री, और विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन शोहदों के लिए क्या संदेश छोड़ा जिसने सरे आम एक लड़की के कुर्ता में हाथ ड़ालने की हिम्मत की। जो लड़कियां शोहदों की मनमानी की शिकार बनी, उनहें ही आपने ड़ंड़ो से पीटा। यह कहां का इन्साफ ? संभोग आयुक्त की जांच में भी विश्वविद्यालय प्रशासन को दोषी पाया गया है। आज आवश्यकता है महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षण की। सख्त कानून होने के बावजुद देश भर में महिला उत्पीडन, यौन शोषण, दहेज हत्या की घटनांए थमने का नाम नहीं ले रही है। समाज को महिलाओं के प्रति अपना नजरिया बदलना होगा तभी वे सुरक्षित रह पांएगी।

यह घोर त्रासदी है कि आज भी एक अकेली लड़की/महिला सम्मान और सुरक्षा के साथ घर से बाहर नहीं निकल सकतीं। दफ्तर या स्कूल–कॉलेज, बाजार या पूजा स्थल, लड़कियों और महिलाओं को छेड़खानी की बेहूदगी झेलनी पड़ती है। छेड़खानी एक औरत के निजेता के अधिकार का हनन है, जिसमें बिना किसी गलती के एक महिला के मान–सम्मान को ठोस पहुचाई जाती है। छेड़खानी की समस्या का शिकार हर उम्र, हर वर्ग के जुड़े लोग शामिल है। इन घटनाओं को अंजाम देने वालों में अशिक्षित और निचले तबके के बेरोजगार से लेकर संभ्रांत वर्ग के ड़च्च शिक्षित युवक और पुरूष सभी शामिल है। स्कूल जाने वाली छात्राओं के साथ न केवल सहपाठी, बल्कि अध्यापक भी छेड़खानी करने से बाज नहीं आते। कई विकृत मानसिकता वाले लोगों के लिए तो महिलाओं को शारीरिक, मौखिक और मानसिक पीड़ा देने वाला यह व्यवहार मन बहलाने का जरिया ये लेकर स्कूल–कॉलेज तक झेलने को विवश है।

पब्लिक ट्रांसपोर्ट में भी मनचले जानबूझकर 'टच' करने के या चुटकी काटने की फिराक में होते है। कई बार तो छेड़खानी करने वालों के स्वच्छन्द व्यवहार के अत्यधिक घातक नतीजे भी सामने आते हैं। स्कूल–कॉलेज जाने वाली छात्राएं ऐसे व्यवहार से तंग आकर खुदकुशी तक कर लेती है। इस असुरक्षित वातावरण के चलते कई स्कूली छात्राओं की पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है। कई बार दूर–दराज के गावों में कई दबंगो ने छेड़खानी का विरोध करने पर पीड़ित लड़की की जान तक ले ली है। इसी सामाजिक असुरक्षा और भय के चलते कई अभिभावक कम उम्र में ही लड़कियों को शादी के बंधन में बाध देते हैं। सार्वजनिक वाहनों में महिलाओं के साथ छेड़छाड़, बदसलूकी आदि की शिकायतें आम है।

गौरतलब यह है कि कुछ लोग पीड़ित युवती को ही दोष देने लगते है। कभी लड़कियों के पहनावे को जिम्मेदार ठहराया जाता है तो कभी घर से निकलने के समय को। छेड़खानी के अधिकतर मामलों में पूरा समाज और सिस्टम उस महिला की पोषाक को अमर्यादित बताकर अपनी जिम्मेदारी से पाला झाड़ने लगता है।

परन्तु, पीड़ितों को ही कठगरे में खड़ा कर देने वाले लोगों के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं होता कि अगर किसी औरत के कपड़े ही उसके साथ हुए अश्लील व्यवहार के लिए जिम्मेदार हैं तो साल भर की भी उम्र वाली मासूम बच्चियों के साथ आए दिन ऐसी घटनाएं क्यों होती हैं ? जरूरत इस बात की भी है कि इन पीड़ादायी घटनाओं को छोटी बात न समझा जाए और इनके सामूहिक विरोध किया जाए, ताकि महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कमी आ सके। जब तक ऐसी विकृत मानसिकता ठीक करने के स्तर पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक समाज की आधी आबादी को पूरी सुरक्षा नहीं मिल सकती है। यह घोर विड़म्बना है कि तमाम प्रयासों और हिदायतों के बावजुद भी हमारी बेठियां ओर महिलाएं आज भी, सुरक्षित नहीं है। छेड़छाड़ के मामलें सामने ही नहीं आ पाते, क्योंकि अधिकतर मामलों में पीड़ित महिलाएं चुप्पी साध लेती है। रोजमर्रा की छेड़खानी की जलालत से बचने के लिए अब सभी लड़कियों और महिलाओं को साहस दिखाकर ऐसे हौसले भरा कदम उठाना होगा। हमारे समाज मे लड़किया/महिलाये निर्भर होकर स्वतंत्र तरीके से अपनी गतिविधियां चलाये, कोई दुराचारी उनको स्पर्श करने का साहस भी न करे, ऐसा वातावरण हर मामलें में बनाने की आवश्यकता है, जिसके लिए समाज को, सबको एवं सरकार को गोलबंद होना पड़ेगा।

मनुष्य की बुराइयां दीर्गजीवी और अच्छाइयां अल्पायु होती हैं। –शेक्सपीयर

स्वच्छ राजनीति अभियान

युवाओं को बीड़ा उठाना होगा

– डॉ. बद्रीप्रसाद ढ़ाका

लोकतंत्र में, देश में सरकार व शासन व्यवस्था चलाने के लिए राजनीतिक पार्टियों का जन्म हुआ। जनता अपने प्रतिनिधि चुनकर, उन्हें राज व शासन व्यवस्था चलाने की जिम्मेदारी देती है। चाहे किसी पार्टी की सरकार हो, जनता देश में स्वच्छ राजनीति, प्रभावी सुशासन, भ्रष्टाचार रहित व्यवस्था, रोजगार, आर्थिक विकास, शांति, स्वतंत्रता की रक्षा, आर्थिक समानता, अभाव व गरीबी से मुक्ति आदि मुद्दों पर काम व परिणामों की अपेक्षा करती है। लेकिन देश में जनता द्वारा चुनी हुई सरकारें पिछले सात दशक से जनता की इन अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरी है।

आजादी के 70 वर्ष बाद पार्टियों एवं राजनीति व्यवस्था का अतिविकृत रूप उभरकर, देश में गांव/मौहल्लों से लेकर दिल्ली तक स्थापित हो चुका है। सिद्धान्तविहीन राजनीतिक व्यवस्था फल–फूल रही है। पार्टियों के नाम चाहे अलग–अलग हों, लेकिन उनके नेता एक ही थाली के चट्टे–बट्टे हैं। सभी का एक ही लक्ष्य होता है – पैसे से सत्ता एवं सत्ता से पैसा। भारत में राजनीति सबसे बड़ा व्यवसाय है। सेन्टर फॉर मीडिया स्टडीज की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2010 से 2014 के बीच चुनावों पर 1.5 लाख करोड़ रुपये खर्च हुए हैं।

देश में किसी एक विषय पर सबसे ज्यादा चर्चा होती है तो वह राजनीति। राजनीति को गाली देने वाले, कोसने वाले हर गांव, गली, मौहल्ले व नुक्कड़ पर मिल जायेंगे। देश में चुनाव बारह मास चलते रहते हैं। देश के लोगों के लिए चुनाव टाईम पास का मुद्दा बन जाता है। बड़ी पार्टियां अपनी जंगी चुनावी मशीनरी की सहायता से सत्ता में बने रहने या सत्ता प्राप्त करने का हरसंभव जुगाड़ करती है।

देश में चुनाव आयोग समय पर चुनाव करवाने में सफल रहा है, लेकिन पार्टियां तथा चुनाव व्यवस्था की बुराईयों पर नियंत्रण करने में असफल रहा है। राजनीतिक व्यवस्था इस तरह पनप चुकी है कि गरीब मतदाता धनवानों को अपने ऊपर राज करने के लिए चुनाव के माध्यम से चुनकर भेजने को मजबूर हैं। मतदाता के सामने कोई विकल्प नहीं होता है। पार्टियां–भ्रष्ट, अपराधी, अयोग्य, अशिक्षित, पूंजीपतियों, बड़े नेताओं के रिश्तेदारों, चाटुकारों को जनता पर थोप देती है। पार्टियों द्वारा गरीब, ग्रामीण व किसान मतदाता को गुमराह करने में, मूर्ख बनाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी जाती है। गरीब मतदाता ठगा जाता है।

देश में विकृत राजनीति के परिणाम सामने हैं। भ्रष्टाचार एवं कुशासन का चारों तरफ ताण्डव नृत्य हो रहा है। ऐसी आर्थिक नीतियाँ बनी है कि देश में आर्थिक असमानता ब्रिटिश राज में वर्ष 1922 के काल को भी मात दे रही है। देश में बिलियॉनर राज स्थापित हो चुका है (थोमस पिकेटी)। नेता व नौकरशाही जनता के सेवक नहीं होकर माई–बाप व मालिक बन बैठे हैं। देश में तीन चौथाई जनता के लिए आर्थिक आजादी व स्वराज अभी भी दूर का सपना बना हुआ है। अंग्रेजी शासन व्यवस्था की जगह, छल–बल–धन के सहारे से हमारे ही देश के लोग राज कर रहे हैं व देश की धन–सम्पदा को लूट रहे हैं, गरीबों का शोषण कर रहे हैं व फल–फूल रहे हैं। देश का गरीब व ग्रामीण मतदाता ठगा–सा देख रहा है। असहाय व मजबूरी की हालत में है। उन्हें सूझ नहीं रहा कि वह क्या करे।

देश में राजनीतिक सत्ता हथियाने के लिए नेता, पूंजीपति व नौकरशाही का ताकतवर गठजोड़ है। गिरोह के रूप में काम करते हैं। गांव से लेकर दिल्ली तक सत्ता के दलाल पनप चुके हैं। प्रश्न उठता है – जब देश में लोकतंत्र है, जनता का राज है तो जनप्रतिनिधि चुने जाने के बाद सरकार एक तरफ व दूसरी तरफ जनता क्यों ? आमने–सामने क्यों ? क्या सरकार जनता की सोच के अनुसार नहीं चल सकती है ? क्या सरकार व शासन को चलाने वाली शक्तियां जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों से अलग है ? देश में हर स्तर पर भ्रष्टाचार एवं कुशासन क्यों ? देश में किसानों द्वारा आत्महत्याऐं क्यों ? एक तरफ देश में जी.डी.पी. बढ़ रहा है, अरबपति खरबपति बढ़ रहे हैं तो देश में गरीबी व भुखमरी क्यों ? पैसे से सत्ता एवं सत्ता से पैसे की राजनीतिक व्यवस्था क्यों ? राजनीति व्यवसाय क्यों ? पार्टियों द्वारा उम्मीदवार ऊपर से क्यों ? जनप्रतिनिधि एवं नौकरशाही जनता की सेवक है लेकिन मालिक क्यों ? देश में पूंजीपतियों के लिए, पूंजपीतियों द्वारा सरकार क्यों ?

यदि ईमानदारी से सोचे तो देश में राजनीति सब बुराईयों की जड़ बन चुकी है। देश में गरीब, ग्रामीण, किसान एवं युवा वर्ग दूषित राजनीति का सबसे बड़ा शिकार है। देश के युवा सोचें। शहीद भगतसिंह एवं अन्य क्रान्तिकारियों ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति क्यों दी थी ? क्या ऐसी आजादी के लिए, जो देश में 70 वर्ष बाद पनप चुकी है ?

देश के प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत बनाने का अभियान जोर–शोर से चलाया जा रहा है। अच्छा है। गंदगी दूर होनी चाहिए; सफाई रहनी चाहिए। लेकिन यदि प्रधानमंत्री देश में 'स्वच्छ राजनीति' का अभियान चलाते तो देश की अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाता। लेकिन राजनीतिक पार्टियों के लिए स्वच्छ राजनीति का अभियान चलाना संभव नहीं है। दूषित एवं चतुर राजनीति से लाभान्वित व पोषित वर्ग इस अभियान को कभी नहीं चाहेगा। फिर इस सर्वत्र व्याप्त राजनीतिक बुराई के विरूद्ध कौन लड़ेगा लड़ाई ? उत्तर स्पष्ट है – देश का युवा वर्ग।

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

देश के युवा वर्ग का भविष्य दांव पर है। देश में स्वच्छ राजनीति की व्यवस्था से ही उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। इसके लिए उन्हें छोटी सोच व छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर देश में स्वच्छ राजनीति का आन्दोलन का बीड़ा उठाना होगा। इसके लिए उपयुक्त समय भी आम चुनावों से पहले का है।

यह अभियान आसान नहीं है। पर्दे के पीछे काम कर रही बड़ी ताकतों से लड़ाई है। दूषित राजनीति की व्यवस्था से लाभान्वित होने वाले हमारे घर में भी हो सकते हैं, पड़ौस व मौहल्ले में भी हो सकते हैं। अभी कोई इस अभियान का नेतृत्व करने वाला भी देश में नजर नहीं आ रहा है। अतः स्वच्छ राजनीति के आन्दोलन के लिए प्रथम युवाओं को स्वयं को व्यक्तिगत तौर पर ही तैयार करना होगा। यह आन्दोलन क्यों जरूरी है खुद को समझना होगा व दूसरों को समझाना होगा। धीरे–धीरे नेतृत्व भी विकसित होगा। शुरू में इस आन्दोलन के लिए विभिन्न माध्यमों से जाग्रति पैदा करना आवश्यक है। युवा इसके लिए अपने समूह बना सकते हैं। पार्टियां अपनी रीति–नीति से वोट बटोरने के लिए काम करेगी। स्वच्छ राजनीति आन्दोलन से जुड़े युवाओं को प्रथम चुनावों में पार्टियों एवं स्वतंत्र उम्मीदवारों में से देखना है कि कौन योग्य, साफ छवि वाला, अनुभवी, आम लोगों के प्रति लगाव रखने वाला, अच्छी सोच वाला उम्मीदवार है। उस उम्मीदवार को समर्थन दिया जाए। कोई भी उम्मीदवार ठीक नहीं हो तो 'नोटा' का उपयोग किया जाए। युवा खुद अपनी सेवाऐं देवें। उम्मीदवार से धन खर्च नहीं करवाऐं। 'एक वोट, एक नोट' देकर उम्मीदवार की मदद करें। स्वच्छ राजनीति का एजेण्डा पर उक्त उम्मीदवार की सहमति लेवें। राजनीतिक पार्टियों के बहकावे में नहीं आए तथा आम मतदाता को जागरूक करें। मत की ताकत व लोकतंत्र का महत्व समझाएं। चतुर राजनीति से आगाह करें। सभी को नहीं तो कुछ लोगों को तो बात समझ में आयेगी ही। युवाओं को दूषित व मजबूरी की राजनीतिक व्यवस्था को ठुकराना होगा व स्वच्छ राजनीतिक व्यवस्था का समर्थन करना होगा, इसके लिए संकल्प लेना होगा। देश के युवाओं की युवा शहीद भगतसिंह को यही सच्ची श्रृद्धांजलि होगी।

स्वच्छ राजनीति का आन्दोलन, दूसरी राजनीतिक एवं आर्थिक आजादी का संघर्ष है। यह लड़ाई अंग्रेजों की लड़ाई से भी मुश्किल है क्योंकि यह लड़ाई अपने ही देशवासियों से है। अंग्रेज दिखाई देते थे। अपेन लोग सब जगह हैं, पर्दे के पीछे हैं, अगल–बगल में बैठे हैं। अतः यह लड़ाई दूषित राजनीतिक व्यवस्था के विरूद्ध है; व्यक्तियों के विरूद्ध नहीं है। अंग्रेजों के साथ जैसा व्यवहार, अपने देशवासियों, अपने लोगों के साथ नहीं हो सकता है।

देश के युवाओं में राजनीतिक जागरूकता से बड़ी पार्टियों द्वारा राजनीति पर एकाधिकार की व्यवस्था को चुनौती मिलेगी। चुनाव व्यवस्था में सुधारों हेतु दबाव बनेगा – जैसे ग्राम पंचायत से लेकर सांसद के एक साथ चुनाव; सरकार द्वारा चुनावी उम्मीदवारों का खर्चा वहन करना तथा पूंजीपतियों द्वारा चुनावी चन्दे पर रोक, पार्टियों द्वारा ऊपर से भ्रष्ट, अपराधी एवं पैसे के बल पर उम्मीदार थोपने की प्रथा में बदलाव आदि–आदि।

देश में स्वच्छ राजनीति की व्यवस्था से ही सही अर्थों में देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित होगी। राजनीतिक एवं आर्थिक आजादी आम लोगों को मिलेगी, आम लोगों की सत्ता में भागीदारी बढ़ेगी, स्वराज स्थापित होगा। देश में पूंजीपति, नेता एवं नौकरशाही के गिरोह समाप्त होंगे। देश में किसानों एवं ग्रामीणों की आर्थिक दशा सुधरेगी एवं ग्राम स्वराज ग्रामीण भारत में स्थापित होगा।

सर छोटूराम ने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष की प्रेरणा दी

– प्रोफेसर दुर्गापाल सिंह सोलंकी

किसान मसीहाः रहबरे आजम सर छोटूराम की जयन्ती पर मावभरा स्मरण।

महान् स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, किसान–कामगारों के सर्वोच्य मसीहा, रहबरे आजम, दीनबन्धु, चोधरी सर छोटूराम जी ईमानदार तपेतपाये राजनेता, जर्बदस्त संगठनकर्ता, किसानों में राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने वाले अग्रणी विचारक, साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने वाले अप्रतिम राजनीतिक और समन्वय मूलक सांस्कृतिक घरोहर को आगे बढाने वाले कुशल सामाजिक एवं उत्कृष्ट देशभक्त थे। उन्होनें भोले–भोले किसानों को बोलना सिखाया। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। मिस्टर जिन्ना की साम्प्रदायिक सोच तथा कांग्रेस की साहूकार एवं हिन्दू लावी को विफल करके हिन्दूमुस्लिम सिख एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

उक्त विचार प्रस्ताव शिक्षाविद व राजा महेन्द्र प्रताप, सर छोटूराम व चौधरी चरण सिंह किसान क्रान्ति कामगार मिशन शोध संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोंलकी ने किसान मसीहा एवं पंजाब के तत्कालीन वित्तमन्त्री रहे चौ. छोटूराम की जयन्ती पर सम्पन्न समारोह एवं राष्ट्रीय विचार संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किए। 10 वर्ष राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर एवं 32 वर्ष तक महाविघालय के प्राचार्य रहे डॉ. दुर्गपाल सोंलकी ने कहा कि चौधरी छोटूराम युग पुरूष थे। उनका पूरा जीवन जन सेवा का अनुपम उदाहरण है। बहुमुखी प्रतियों के धनी सर छोटूराम विचारशील, विवेकी एवं सिद्वान्तवादी विज्ञान महानुभाव थे। उन्होनें गरीबों, दलितों, अल्पसंख्कों, शोषित एवं उपेक्षित लोगों के लिए जीवन पर्यन्त लड़ाई लडी। उन तबकों के सच्चे हमदर्द होने के कारण वे 'दीनबन्धु' की उपाधि से विभूषित हुए। प्रोफेसर

साहब ने कहा कि छोटूराम सभी वर्गो के हितैषी थे और उन्हें किसी जाति विशेष या वर्ग से बांधना उनके प्रति अन्याय होगा। उन्होनें केवल किसानों और मजदूरों के लिए ही पहीं, अपितु दुकानदारों और व्यापारियों के हितों के लिए बडे काम किए। डा. दुर्गपाल सोंलकी ने कहा कि वास्तव में गरीबों के हितों की रक्षा के लिये तत्कालीन युग में सर छोटूराम जैसा प्रतिबद्ध नेता दूसरा कोई नहीं दिखता। यही कारण है कि हिन्दू और मुसलमान किसानों ने उनको मिलकर "रहबर–ए–आजम" की उपाधि से नवाजा। उनके घोर आलोचक भी एक स्वर से स्वीकारते हैं कि काश, छोटूराम कुछ दिन और जीवित रहते तो देश की अखण्डता बची रहती और पाकिस्तान नहीं बनता। प्रोफेसर दुर्गपाल सिंह सोंलकी ने कहा कि आज छोटूराम हमारे बीच नहीं है लेकिन हमारे पास उनके विचार, नीतियाँ व कार्यक्रम हैं यदि सही मायने में देश का विकास करना है हमें दीनबन्धु के बताये रास्ते पर चलना होगा, तभी हम एक नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब हो सकेंगे। डा. सोंलकी ने मिशन एवं शोघ संस्थान के कार्यकर्ताओं, शोघार्षियों तथा उपस्थित जन समुदाय का आव्हान करते हुए कहा कि वे सर छोटूराम के दिखलायें रास्ते पर चलते हुए रचनात्मक कार्यो में सक्रियता से जुटने का संकल्प लेकर राष्ट्र निर्माण के उनके सपनों को साकार करे, क्योंकि उनके विचार नीतियां एवं कार्यक्रम आज भी प्रांसगिक एवं सार्थक है।

इतिहासविद् प्रो. अरूण प्रताप सिंह 'चमन' ने कहा कि चौ. छोटूराम दो कारणों से आर्थिक हिन्दूस्तान पंजाब की राजनीति में हारे थे। हमारे देश के इतिहास में छोटूराम का नाम हमेशा किसान जाग्रति से जुडा रहेगा। उन्होनें किसानों के आत्म सम्मान के साथ जीने के लिए प्रेरित किया। किसान हितों के विधेयक पास करवा कर कानून बनाये। उन्हें कर्जो से मुक्ति दिलवाई गिरवी रखी हुई जमीन किसानों कों वापिस दिलवाई। किशोरीरमण पोस्ट–ग्रेजुएट कॉलेज मथुरा के राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर डा. सुधीर प्रताप सोंलकी ने कहा है कि छोटूराम जी राजनीतिक स्वतन्त्रता से पहले आर्थिक स्वतन्त्रता जरूरी समझते थे। सर छोटूराम किसान कि आर्थिक आजादी को प्रमुख मानते थे। इसीलिए उसी मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी से अलग होकर 'यूनीयनिस्ट पार्टी' की स्थापना कर पंजाब में सरकार का संचालन किया।

अध्यक्षीय सम्बोधन में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी चौधरी तेजासिंह वर्मा ने कहा कि सर छोटूराम पिछडेपन का मुख्य कारण शिक्षा की कमी को मानते हे। उनकी कामना थी कि शिक्षा का प्रकाश दूर–दूर तक के गावों तक फैले। उन्होनें किसानों और गरीबों की आवाज बुलन्द करने के लिए "जाट–गजट"नामक अखबार का प्रकाशन किया। वे भ्रष्टाचार के घोर विरोधी थे। "ठगी के बाजार की सैर" लेखभाला छपवा कर भृष्टाचार पर करारी चोट दी। तेज वर्मा ने दीनबन्धु के आदर्श से प्रेरणा लेने की अपील की। परिवहन अघीक्षक रहे कुंवर अजीत सोंलकी ने छोटूराम के व्यक्तित्व व कुतिल पर प्रकाश डालते हुए जींद एवं चण्डीगढ में उनके नाम पर विश्वविद्यालयों की स्थापना पर बल दिया। व्योवृद्ध व समाजसेवी माता श्रीमती दुग्रेश रानी कुंवर साहिबा ने दीप प्रज्जवलित कर तथा सूबेदार श्यामसिंह तोमर द्वारा छोटूराम जी के चित्र पर माल्यापूर्ण कर समारोह का शुभारम्भ हुआ। एश्वर्य ने स्वागतगान प्रस्तुत किए। श्रीमती विमलेश कुमारी सविता चौधरी व तनुराज सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। संयोजक एवं विघार्थी कल्याण सभी के अध्यक्ष श्री अजीत कुमार अत्री ने परिचय, संचालन, आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

माँ की महिमा- क्योंकि वो माँ है

– अनामिका

मां को सारे परिवार की चिंता रहती है। एक घर में देर रात तक बर्तनों की आवाज आ रही थी। रसोई का नल चल रहा है। मां रसोई में काम कर रही थी। तीनों बहुएं अपने–अपने कमरों में सो रही हैं। मां रसोई में हैं। मां का काम बकाया रह गया तो अब भी सबका काम अपना ही मानती है। दूध गर्म करके फिर ठंडा करके जावण देना है. ..ताकि सुबह बेटों को ताजा घी मिल सके...। सिंक में रखे बर्तन मां को कचोटते हैं। चाहे तारीख बदल जाए, सिंक साफ होना चाहिए। बर्तनों की आवाज से बहू–बेटों की नींद खराब हो रही है। बडी बहू ने बडे बेटे से कहा, तुम्हारी मां को नींद नहीं आती क्या न खुद सोती न सोने देती हैं।

मंझली ने अपने पति से कहा, अब देखना सुबह चार बजे फिर खटर–पटर चालू हो जायेगी, तुम्हारी मां को चैन नहीं है क्या छोटी बहू ने भी अपने पति से कहा, प्लीज जाकर ये ढोंग बंद करवाओ कि रात को सिंक खाली रहना चाहिए। मां अब तक बर्तन धो चुकी थीं। झुकी कमर, कठोर हथेलियां, लटकी सी त्वचा, जोडों में तकलीफ, आंखो में पका मोतियाबिंद, माथे पर टपकता पसीना, पैरों में उम्र की लडखडाहट, मगर दूध का गर्म पतीला मां आज भी अपने पल्लू से उठा रही हैं ओर उनकी अंगुलियां जलती नहीं है, क्योंकि वो मां है। दूध ठंडा हो चुका... जावण भी लग चुका... घडी की सुईयां थक गई, मगर...मां ने फ्रिज में से भिडी निकाल लीं और काटने लगी।

उसको नींद नहीं आती है, क्योंकि वो मां है। कभी–कभी सोचता हूं कि मां जैसे विषय पर लिखना, बोलना, बनाना, बताना, जताना कानूनन बंद होना चाहिए, क्योंकि यह विषय निर्विवाद है, क्योंकि यह रिश्ता स्वयं कसौटी है।

हम हमेशा कठिनाई के स्थान पर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं। जबकि कठिनाई से वही निपट लेना श्रेष्ठ होता है। –अज्ञात

रात के बारह बजे सुबह की सब्जी बनाने के निए भिंडी कट गई...। अचानक याद आया कि गोली तो ली ही नहीं... फिर बिस्तर पर तकिए के नीचे रखी थैली निकाली. ..। चंद्रमा की रोशनी में गोली के रंग के हिसाब से मुंह में रखी और गटक कर पानी पी लिया। बगल में एक नींद ले चुके बाबूजी ने कहा आ गई। हां, आज तो कोई काम ही नहीं था, मां ने जवाब दिया और लेट गई, कल की चिंता में। पता नहीं नींद आती होगी या, नहीं, पर सुबह वो थकान रहित होती है, क्योंकि वो मां है। सुबह का अलार्म बाद में बजता है, मां की नींद पहले खुल जाती है। याद नहीं कि कभी भरी सर्दियों में भी मां गर्म पानी से नहाई हो। उन्हें सर्दी नहीं लगती, क्योंकि वो मां है। अखबार पढती नहीं, मगर उठाकर जरूर लाती है, चाय पीती नहीं जल्दी खाना खाती नहीं, मगर बना देती है..... क्योंकि वो मां है। मां पर बात जीवन भर खत्म न होगी..... क्योंकि मां संपूर्ण जगत है।

संस्कार का महत्व

– आचार्य अनिल वत्स

हमारे जीवन में संस्कारों की आधारशिला हमारे माता–पिता बचपन से ही रख देते है और फिर उसी दिशा में हमारे व्यक्तित्व का विकास होता हैं हालांकि वर्तमान में अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों को महान गणितज्ञ, वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनने के लिए प्रेरित करते हैं, लेकिन यह कतई संभव नहीं है कि हर बच्चा अपने क्षेत्र में महान बने, मगर बच्चे को हम सत्यावादी, आज्ञाकारी, परोपकारी जरूर बना सकते हैं। प्रथम गुरू होने के नाते हर माता–पिता को अपने बच्चे को आदर्श बनने की प्रेरणा देनी चाहिये। माता–पिता को बच्चों को पशु–पक्षियों से प्रेम करना, पेड़–पौधों की रक्षा करना और अपने से बड़ों का आदर करने की सीख देनी चाहियें। किसी भी बालक का चरित्र ही उसकी सबसे बड़ी पूंजी होती है और उसे जीवनभर इसकी रक्षा करनी चाहिये। चरित्रवान व्यक्ति ही समाज, राष्ट्र व विश्व का सही नेतृत्व और मार्गदर्शन कर सकता है। स्वामी विवेकानन्द ने मनुष्य के चरित्र को उसका वास्तविक धन बताया है यानी चरित्र की पूर्ति धन, यश, नाम, विद्वत्ता इत्यादि में से कोई नहीं कर सकता है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि यदि किसी बालक में चरित्र का निर्माण हो गया तो बाकी चीजें स्वयं हो जाती हैं।?

चरित्र निर्माण के लिए व्यक्ति को संतोषी स्वभाव का होना चाहिए। संतोष से तात्पर्य है मानव अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं पर नियंत्रण रखें। संस्कारी व्यक्ति हमेशा अपनी इन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रखता है, जिससे उसमें हमेशा संतोष का भाव रहता हैं दूसरी ओर ज्यादा पाने की अभिलाषा मनुष्य को भ्रष्ट बना देती है और भ्रष्ट व्यक्ति भौतिक वस्तुओं का दास बन जाता है जबकि संस्कारी व्यक्ति इन वस्तुओं को अपना दास बनाता है। हमारे मन–मस्तिक में जैसे विचार आऐंगे, हमारे कर्म भी वैसे ही होंगे और कर्म ही हमारे चरित्र का निर्माण करेंगे। न केवल जीते–जी, बल्कि मरणोपरांत भी व्यक्ति का चरित्र जीवित रहता है। चरित्र का निर्माण करने वाले हमारे विचारों को हमारे आस–पास का वातावरण प्रभावित करता है। यदि हम अच्छे समाज और लोगों की संगत में बैठेंगे तो हमारे विचार भी उच्चे होंगे। हमारी शिक्षा भी हमारे विचारों को मजबूती प्रदान करती है, इसलिए हर बालक के लिए शिक्षा प्राप्त करना भी जरूरी हैं।

व्यंग्य और विद्रोह से भरपूर रचना

– डॉ० धर्मचन्द्र विधालंकार

गीत व गजल एवं दोहों ने ही वर्तमान काव्य को पुनः एक नया जीवन प्रदान किया है। क्योंकि नई कविता की अगम्य अगोचर मुद्रा ने उसे रहस्यात्मक गघ ओर असंवेघ जो बना दिया है। श्री हरिराम 'समीप की अब तक बहुत सारी कृतिया गजलों और दोहों पर छप चुकी हैं। इस श्रृखंला में 'आखें खोलो पार्थ' डनका नया दोहा–संग्रह है। जिसमें राजनीती से लेकर अर्थतन्त्र तक की शव–परीक्षा उन्होनें की है। जैंसा कि रचनाकार ने स्वंय पुस्तक की भूमिका में भी स्पष्ट किया है– "जिस बात ने मुझे सबसे अधिक परेशान किया था, वह थी– मानवीय मूल्यों में हो रही गिरावट। पूरी दुनिया में आज जीवन का महत्व भयानक रूप से घटरहा है और धन का महत्व बढा रहा हैं। हमारे सामने इस प्रवृति के दुष्परिणाम अनेक रूपों में नजर आ रहे है– जैसे विकृत राजनीती मूल्यहीन और बढते हुए अतिवाद ने सम्पूर्ण धरती पर मौत और दुःख का तांड़व मचा रखा है। बाजार ऐसी ही स्थितियों की ताक में सदैव रहता है आज ड़सने विश्व–व्यापार संसार को पुनः हथिया लेने का षड़यन्त्र रचा है। यही है नया साम्राजवादी एजेण्ड़ा, जिसने इसके लिए कट्टरवाद या फिर फांसीवाद को कारगार मोहरा बनाया है।

इस प्रकार से हरिराम समीप ने अपनी रचनात्मक मनोभूमि स्पष्ट कर दी है। तभी तो उन्होनें राजनीती पर व्यंग्य किया है–

"राजनीती ने देश से, किया यही षड़यन्त्र,
लोकंतन्त्र के नाम से थोप दिया धनतंत्र
बदल–बदल आती रही चाहे जो सरकार
दौलत का कब्जा रहा मेहनत पर हर बार।"

नव उदारवादी नीतियों के कारण कुछ लोगों की सम्पन्नता बढी है तो बहुसंख्यक जन उतना ही बेहाल होता जा रहा है। इस विकराल विषमता पर भी दोहाकार ने उगंली ड़ठाई है–

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो। तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा भावे

"देखों ये अंधेरा, धन का रूप विरूप।
इधर अंधेरा बढ रहा, ड़धर खिल रही धूप।।
वे हैं मेरी पीठ पर, मैं हुँ डनका अश्व–
सदियों से डनका रहा, हम पर यूँ वर्चस्व।"

अर्थ–व्यवस्था में ही क्यो, अब तो शिक्षा–व्यवस्था तक इतनी मंहगी हो गई है, कि यह निरन्तर निर्धनों की पहुँच से बाहर होती चली जा रही है। अतएव आज नये–नये द्रोणाचार्य (लक्ष्मीपति) कितने ही एकलव्यों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर रहे हैं–

"शिक्षा में चारों तरफ, फैले द्रोणाचार्य,
दलितों अँगूठे दे रहे, ज्ञान पा रहे आर्य।"

बड़े–बड़े कान्वेंट स्कूल और महाविद्यालयों की मंहगी शिक्षा निजीकरण के चलते निर्धन परन्तु मेधावी छात्रों के लिए दुर्लभ हो गई है।

उधर गोरक्षा अथवा धर्म के नामपर एक निपट निरक्षर वर्ग धर्मोंचन्द में भरकर निर्दोष नागरिकों का निर्मम भाव से वध करने पर उतारू है। एक प्रकार की 'सिविल मिलेशिया' अथवा 'नागरिक सेना' धर्मराष्ट्र के नाम पर कानून–व्यवस्था को अपने हाथ में लेकर न्याय–तन्त्र को अपने धर्मतन्त्र से संचालित करना चाहती है–

"वे आये हुंकारते ले ड़ण्ड़े बन्दूक,
फिर उनमादी भीड़ ने मार दिया शम्भूक,
हमें दलित तुम कह रहे को कहो सवर्ण।
याद नहीं इतिहास क्या, एक हुआ है कार्य।।

नई राजसता जब से आयी है, तब से समाज में एक बार फिर से सामन्तवादी ओर पुरोहतिवादी प्रवृतियाँ प्रबलता के साथ अपना सिर उठा रह हैं। बड़ी ही कठिनाई से जनतन्त्र की स्थापना और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात श्रमिक वर्गो के हाथों में राज–सता की ड़ोर आई थी, अब वह पुनः एक बार उन्हीं पोंगापन्थी धर्मध्वजियों के हाथों में पहुचँ गई है जोकि लोकतन्त्र के स्थान पर एकतन्त्रात्मक राजतन्त्र के प्रबल पक्षधर है–

"सता ने वर्चस्व पर ऐसा किया प्रहार,
लोकतंत्र की पीठ पर, तानाशाह सवार।
पनप रहा जो आजकल, आपस में अलगाव,
खत्म न करदे वह कहीं, बरसों का सद्भाव।।"

दोहाकार समीप ने यहाँ पर यह स्पष्ट सकेंत दिया है कि अब सता–शीर्ष पर शोषित सज्जन स्वयं ही 'श्मसान और कब्रिस्तान' तथा 'दिवाली बौर रमजान' के बीच भेदभाव की आग लगाकर जनता–जर्नादन को बाँट रहे है। जबकि उनका कार्य–कलाप तो सर्वधाम का ही होना चाहिये था। ऊपर से भले ही नारा अब "सबका साथ और सबका विकास" का दिया जा रहा है। लेकिन व्यावहारिक स्तर पर दलितों और पिछड़ों तथा अल्पसंख्यकों को निरन्तर परिधि पर ही पटका जा रहा है। क्योंकि उनकी आजीविका के अजस्र साधनों और स्त्रोतों को अन्ध–धार्मिकता के चलते अव्युद्ध किया जा रहा है। पशु–व्यापार एवं मांस–विक्रय जैसे व्यवसाय उनसे छीन लिए गये हैं। दूसरी बोर दलितों के घर पर भोजन दलित युवा वेमुला का भी स्मरण किया है।

"रोहित वेमुला मरा, मैं रह गया अवाक्।
भारत का इक रतन फिर हुआ, अचानक खाक्।।"

यह एक विचित्र है कि राजनीति जैसे कर्म–कठोर जीवन–क्षेत्र में अब ऐसे लोग पर्दापण करने लगें हैं जोकि जातिगत जीवन–संघर्ष से पहले ही विमुख एवं परजीवी थे। श्री हरेराम 'समीप' ने इस ओर भी संकेत किया है–

"सता और व्यापार में आने लगे महन्त,
काँटो पर भी आजकल छाने लगा बसन्त।"
"राजनीति अब हो गई हुड़दंगो की फौज।
विध्वंसी जितना बड़ा ड़तनी मौज।।"

गोरक्षा एवं धर्मरक्षा के नाम पर अब कालबाह्य धर्मादेशों को लेकर पोंगापंथी लोग राजनीति में प्रवेश पा गये हैं। अब आम जनता के बेकारी और विषमता जैसे प्रश्न इसीलिए वहाँ से विस्थापित कर दिये गये है। अंधविश्वासों की भरमार है और कट्टरता दिनोंदिन बढती जा रही है। उसी अनुपात में सहिष्णुता घटती चली जा रही है। छदम् राष्ट्रवाद के नाम पर घोर घृणा फैलाई जा रही है। कविवर 'समीप' ने इस विषय को भी उठाया है–

"राष्ट्रवाद के नाम पर, यू फैला विद्वेष।
ये है मेरा देश तो, वो है तेरा देश।।
सद्भावों की नाव में, करे सियासत छेद।
जिससे राम–रहीम में, बना रहे मतभेद।।"

सास्कृतिक राष्ट्रवाद के नाम पर एक ही धर्म–पंथ को सबका सिरमौर बताकर उसका बातादपोर अल्पसंख्यकों पर किया जा रहा है। अब तो छतीसगढ जैसे तो राज्यों में धर्म या मत–परिर्वतन की अनुमति उनासुक्त से लेनी चाहिये। उसका विश्वास बजाय तथ्य के अर्धसत्यों पर अधिक है। इसी के चलते मूलवासर द्रवविड़ों की सिन्धु–सभ्यता को हजी अब आर्यो की वैदिक सभ्यता बताया जा रहा है। घग्धर नदी को ही सरस्वती सभ्यता एवं सिंधु सभ्यता बखाया जा रहा है और सिंधु सभ्यता के क्षेत्र के मुस्लिम बहुल पाकिस्तान में चले जाने पर सरस्वती सभ्यता को ही अब बताया जा रहा है। इस प्रकार से उल्टी गंगा बहाई जा रहा है। इसी बेतुकी और असंगत तथ्यहीन चीर–फाड़ को देखकर इस दोहाकार की जनतांत्रिक आत्मा चीत्कार कर उठती है–

"राष्ट्रवादी के नाम पर इतिहासों को छील।
सड़े–गले सामान पर, बैठे कोए चील।।
देशभक्ति समझाए वह, करके हमें तबाह।
उद्धारक की शक्ल में, आया तानाशाह।।"

राजनीति में धर्म का घोलमेंल करके वर्तमान राज–व्यवस्था ने उनको जनविमुख और विरोधी बना दिया है। क्योंकि एक धर्म विशेष के प्रति दुराग्रह के चलते एकता को कमजोर किया जा रहा है। जिन लोगों का राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में कोई सक्रिय अहकार नहीं था, वही आजकल औंरो को देशभक्ति के प्रमाण–पत्र वितरित कर रहे हैं। जो लोग साम्प्रदायिक आधार पर भारतीय जनमन को बाँट रहे थे, भला वे राष्ट्रीय एकता के विधायक कैसे सिद्ध हो सकते

हैं। लोगों को आज जबरन ठोक कर देशभक्त वही बना रहे हैं। राष्ट्रवाद के स्थान पर बल दिया जा रहा है। सामाजिक भारतीय संस्कृति की बहुलता को नष्ट करके उसका एकाश्म और एकल बनाया जा रहा है।

राजनीतिक क्षेत्र में अब विचारधारा एवं सिद्धान्तों तथा आदर्शवाद के लिए कोई स्थान ही शेष नहीं रह गया है। सता लोलपुता ने अवसरवाद और सिद्धान्तहीनंता को ही सबसे बड़ा नीति–सिद्धान्त बना दिया है। दल–बदल विरोधी नियम–विधान को नये सताधारियों ने कई अर्थ ही अब नहीं रख छोड़ा है क्योंकि अल्पमत में रहते हुए भी उन्होनें कई प्रदेशों में दल–बदल कराकर सता का स्वाद चखा है। तभी तो हरिराम समीप यह कह उठते है–

"समझे मौसम की दशा, वह पहचाने बख्त।
छल बदला कल रात में, सुबह मिल गया तख्त।।"

बिहार जैसे प्रदेशों में हमने यही देखा और भुगता है। आजकल राजनीति में नैतिकता का नाम निशेष हों गया है। जनतन्त्र में अब कांग्रेस मुक्त भारत का भव्य नारा देकर नये सताधीश हिटलर की ही फासीवाद भाषा बोल हैं। उनके प्रतिपक्षी ही आज उनकी दिव्य में राम पातकी हैं। यही दृष्टि तो अधिनायकवादी प्रतीत होती हे।

वर्तमान समाज में फैलती जा रही मूल्यहीनता और सम्बन्धहीना पर भी इस अपनी उगली उठाई है। आपसी विश्वास और भाईचारा खत्म हो गया है। बेईमानी और हेराफेरी ही अब सफलता के सूत्र बन गये हैं। तभी तो कवि कहता है–

"मूल्यों को दीमक लगी, आदर्शो को रोग
समबन्धों में शक घुसा, नेकी पर अभियोग।
इस बाजारू दौर में, बेबस है इंसान।
लगा रहा है दाँव पर, बचा खुचा ईमान।।"

इस प्रकार से दोहाकार समीप ने बाजारवादी उपभोक्ता से लेकर राजनीति अवसरवाद और धार्मिक कट्टरवाद से लेकर मूल्यहीनता एवं बेकारी और विषमता को भी अपने काव्य का उपीजीव्य विषय बनाया है। दोहों की भाषा सरल और सार्थक है। व्यग्य और विद्रोह इस कृति के प्राण है। अतएव यह काव्यकृति सरस और विचारोतेजक भी है।

The Three Jat Trail Blazers

(Ch. Lajja Ram, Ch. Lalchand and Ch. Sir Chhotu Ram)

- Brig. K. Narendra Singh, Delhi

Over a hundred years ago. Three Jat brave hearts joined St. Stephen's Mission College at Delhi. Each of them had a dream and a mission to undertake. Lajja Ram Malik from Panipat was followed by Chottu Ram and Lai Chand from Rohtak. All three of them excelled both in studies and sports and earned respect of Principal Alnut. Unable to meet the expences Chottu Ram quietly left for his village to take up the job of Patwari as advised by his father. Ch. Lajja Ram rushed after him and brought him back with the assurance that they will manage it togehter.

Much has been written about Sir Chottu Ram who was a kingpin in the Unionist Ministry and played a major part in bringing the legislation to protect rural holdings, an end to the indebtedness to the money lender and his plans for the Bhakhra Irrigation Project. However, before the other two go into obscurity, on insistance of Dr. JK Gahlawat here is reminiscence on them.

The elder of the two, Laj j a Ram was embued with a burning desire for emancipation of his neglected Jat tribe. On his insistance Lal Chand also applied and got selected for the appointment ofNaib-Tehsildar. But he had a different dream, that is. to make a niche for himself among the high and the mighty, for they controlled the destiny of others. Along with Chottu Ram, he joined Law College and in course of time, they both established a joint flourshing practice at the Punjab High court.

On establishment of provincial legislature, Ch. Lai Chand got elected as an MLA and joined the first Punjab Ministry under Sir Fazal Husaain. Chottu Ram having joined Indian National Congress challenged the election and got it set aside on technical reasons. There after, they parted company. Ch. Lai Chand was

no push over; he was taken as a minister in Bharatpur State. However, due to lack of financial mismanagement and reckless spending of His Highness, he resigned and got back to the High Court. Appreciating his talent. he was made a Member of the Punjab and NWFP Public Service Commission. He was honoured with the title of Rao Bahadur and confered Order of the British Empire. In his long innings there, he did commendable services to the rural community in getting them into government jobs and in commissioned rank in the armed forces during the World War II. In implementation of the promise made during the colleae day, Ganga Devi the first child of Lal Chard was married to Dharam Sing, the only progeny of Lajja Ram.

Ch. Lajja Ram's mission vvas at the grass roots of rural communities, Maharaja Suraj 'tlal and Swami Davnandwere his icons. He realized that as a Tehsildar, he can achieve his mission and in consequence got his son Dharam Singh to join also as a Tehsildar. Together the duo (father and son) devoted themselves whole heartedly to serve the rural community. Due to his very fair complexion and robust physique, Ch. Lajja Ram was often called a Scot by his British seniors. He could brook no uneomplimentry remarks about his country men and for such a transgression he had hit Major Engilo, they Deputy Commissioner, with his Malaca cane. this had resulted in his suspension, which was revoked by the Governor.

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। –मनु

According to the old family prohit the Gathwala - Malik fats had come from Kikun Valley in Afghanistan and settled in the Doab of Ghaggar and Jamna rivers trading horses with both adversaries fighting for the Delhi. In Tuz-ke-Babri there is also a mention of vast rivers of Hindustan and Jat Raiders of Doab.

Ch. Lajja ram had spurned the offer of being selected to PCS cadre being the only graduate Tehsildar as his karam-bhoomi was in the rural areas. He worked tirelessly for ensuring greater dignity to the community and would demand proper tieing of turbans, proper hygiene, clean clothes, friendly behaviour, shunning of inter and intra family fueds resulting in ruinous litigation, adoption of improved seeds and furrow turing steel ploughs. Among his many admirers were Rao Sahib Nand Ram, Rao Bahadurs Bans Gopal, Ch. Het Ram, Suraj Mal and Ramdhan Singh.

Ch. Lajja Ram had appreciated that during the World War-I, if the W'hite' Nations see the fighting quality - grit, courage and fortitude of the Indian soldier, our country would earn their admiration and good will resulting in furtherance of the fight for `Puran Swaraj'. Hence the Jat heartland and picked up the ower of their youth and in a special train took them to Delhi. They were received by Col R. Verney, CIE, the Millitary Secretary to the Viceroy and Governor General Lord Chemsford. Majority of these young me filled the ranks of 6 Jat (1st Royal) who withstood the German onslought in Flanders (France) in the trenches flooded by the enemy for weeks in freezing cold and suffered near 80 percent casualties. The complimentry message by their Divisonal Commander read - "UNDER THE TREAD OF THE JAT, THE EARTH TREMBLED."

`F.L. Brayne, the well known ICS officer, used the talent of Ch. Lajja Ram in composing his poetry in the spoken Haryanvi language and he got popularity in the rural areas for his village uplift plans. At an investure ceremony, the Punjab Governer presented to Ch. Lajja Ram, Qaiser- e-Hind medal and a Sword of Honour sent by the Viceroy and Governer General for services to the Indian Army in World War I. His grand son, great grand son and great- great grand son - three generations have donned the Army uniforms.

Ch. Lajja Ram got his satisfaction in igniting the Jat pride who had been for long suppressed by the petty Nawabs holding sway over vast lands around Delhi at Kanjpura, Pataudi, Farrukh Nagar, Jajjar etc. He breathed his last in 1945 without seeing the achievement of freedom by the country.

कर्म बड़ा या भाग्य

– ओ.पी. झांब, जिला रोजगार अधिकारी

इस दुनिया में कर्म को मानने वाले लोग कहते हैं कि भाग्य कुछ नहीं होता और भाग्यवादी लोग कहते हैं कि किस्मत में जो लिखा होगा वही होकर रहेगा। अर्थात मानव कर्म और भाग्य इन 2 बिन्दुओं की धुरी पर घूमता रहता है और एक दिन संसार को छोड़ जाता है। भाग्य और कर्म को अच्छे से समझरने के लिए पुराणों में एक कहानी का उल्लेख है। एक बार देवर्षि नारद ने विष्णु जी से कहा, प्रभु धर्म पर चलने वालों को कोई अच्छा फल नहीं मिल रहा और जो पाप कर रहे हैं उनका भला हो रहा है। तब श्री हरि जी ने कहा, ऐसा नहीं है देवर्षि, जो भी हो रहा है वह नियति के अनुसार हो रहा है। नारद जी बोले कि मैं तो देख कर आ रहा हूं। पापियों को अच्छा फल और भला करने वाला और धर्म के रास्ते पर चलने वाले लोगों को बुरा फल मिल रहा है। भगवान जी ने कहा, ''कोई ऐसी घटना सुनाओ। नारद जी ने कहा कि अभी मैं एक जंगल से आ रहा हूं। वहां एक गाय दलदल में फंसी हुई थी। कोई बचाने वाला नहीं था। तभी एक चोर उधर से गुजरा। उसने गाय की सहायता नहीं की परंतु वह गाय पर पैर रखकर दलदल लांघ कर निकल गया। आगे जाकर चोर को सोने की मुहरों से भरी एक थैली मिली। थोड़ी देर बाद वहां से एक वृद्ध साधु गुजरा और अपना पूरा जोर लगाकर गाय को दलदल से निकाल कर बचा लिया। लेकिन मैंने देखा कि गाय को दलदल से निकालने के बाद वह साधु आगे गया तो एक गड्डे में गिर गया। प्रभु बताओ यह कौन सा न्याय है। नारद जी की बात सुनकर प्रभु बोले कि यही हुआ है। जो चोर गाय पर पैर रखकर भाग गया था उसकी किस्मत में तो एक बहुत बड़ा खजाना था परंतु उसके इस पाप के कारण उसे केवल कुछ मोहरें ही मिलीं। वहीं उस साधु को गड्डे में इसलिए गिरना पड़ा क्योंकि उसके भाग्य में मृत्यु लिखी थी लेकिन गाय को बचाने के कारण उसके पुण्य बढ़ गए और उसकी मृत्यु एक छोटी सी चोट में बदल गई। इंसान को अच्छे कर्म करते रहना चाहिए क्योंकि कर्म से भाग्य बदला जा सकता है।

आवश्यक सूचना

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा जनवरी 2018 से समय-समय पर जनहित में ''परिवार परिचय सम्मेलन'' का आयोजन शुरू किया जायेगा जिसमें विवाह योग्य युवक-युवतियों का पारस्परिक परिचय कराया जायेगा। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले युवक-युवतियों व उनके माता-पिता/अभिभावकों के लिये भवन परिसर में रात्रि विश्राम व खाने की व्यवस्था भी की जायेगी।

आप सभी से निवेदन है कि इस कार्यक्रम के सफल व भली-भांति आयोजन के लिये अपने विचार व सुझाव जाट भवन, 2-बी, सैक्टर-27 ए, चंडीगढ़ व सर छोटूराम जाट भवन सैक्टर-6, पंचकूला में भेजने का कष्ट करें।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

आस्था या अंधविश्वास

– हवा सिंह सांगवान, भिवानी

आस्था इंसान को सबल बनाती है तो अंधविश्वास कमजोर करता है। आस्था एक साधारण इंसान को आत्मविश्वास प्रदान करती है। अपने परिवार, समाज व देश पर आस्था होना आवश्यक है। इसी प्रकार एक साधारण इंसान को अपना आत्मबल बनाए रखने के लिए ईश्वर, भगवान, अल्लाह व वाहेगुरू आदि में आस्था रखनी पड़ती है। ऐसे ही इंसानों को हम आस्तिक कहते हैं और जो इनमें विश्वास नहीं रखता, उन्हें हम नास्तिक कहते हैं। नास्तिक होना एक साधारण इंसान के बस से बाहर है, क्योंकि इसके लिए बहुत बड़ा जिगर चाहिए अथवा बहुत ही निर्भीक होने की आवश्यकता है। जिस प्रकार शहीदे–आजम भगत सिंह थे। उन्होंने इस सच्चाई को सहृदय से स्वीकार किया तथा अपने को नास्तिक होने के कारणों को बहुत ही स्पष्ट तरीके से अपने लेख 'मैं नास्तिक क्यों?' में वर्णन किया है। हर कोई भगतसिंह तो बनना चाहता है, लेकिन हमारे जैसे साधारण लोगों के लिए उनके आदर्शों तथा नीति पर चलना संभव नहीं। आम जीवन में देखा गया है कि आस्तिक और नास्तिक इंसानों के कार्य समान रूप से होते रहते हैं, इसीलिए हम कह सकते हैं कि आस्तिकता अंधविश्वास के बहुत करीब है। इसलिए आस्था व अंधविश्वास में भेद करना बड़े जोखिम का काम है। वास्तव में अंधविश्वास कायर इंसानों का हथियार होता है, जो आमतौर पर अच्छाई का श्रेय स्वयं लेते हुए बुराई का दोषारोपण भगवान के मत्थे मंढते रहते हैं। अंधविश्वास एक इंसान को ही नहीं, पूरे समाज व देश को खोखला करता रहता है। आस्था को किसी हद तक सीमा में बांधा जा सकता है, लेकिन अंधविश्वास की कोई सीमा नहीं होती। आस्था और अंधविश्वास ने पूरे संसार को अपने आगोश में जकड़ रखा है। लेकिन जिस प्रकार का अंधविश्वास हमारे देश में रहा है, ऐसा शायद कहीं भी नहीं। जितना अंधविश्वास हमारे सभ्य कहे जाने वाले समाज में है, ऐसा हमारे आदिवासी कहे जाने वाले क्षेत्रों में भी नहीं। जितना अंधविश्वास धनाढ्य वर्ग में है, वैसा गरीबों में नहीं। जितना अंधविश्वास शहरों में है, उतना गांवों में नहीं है। शहरों में हर कार्य का श्रीगणेश हिंदू लोग देवी देवताओं की मूर्तियों को अगरबत्तियों का सुगंधित धुआं सुंघाकर आरंभ करते हैं। और यदि किसी को एक छींक भी आ जाए तो पूरे दिन के कार्यक्रम बदल जाते हैं। यह अंधविश्वास की पराकाष्ठा है।

हम इतिहास पर गौर करें, तो पाएंगे कि हमारे देश की लगभग एक हजार साल की गुलामी का मुख्य कारण अंधविश्वास था, न कि आपसी फूट। आपसी फूट का रोना अक्सर रोया जाता है, जो दूसरों के कारण थी लेकिन इन फूट डालने वालों का कभी जिक्र नहीं किया जाता। सन् 712 में सिंध की सबसे बड़ी रियासत आलौर थी, जिस पर चर्चित ब्राह्मण राजा चर्च के पौत्र दाहिर का शासन था। इस रियासत पर अरब के खलीफे इज्जाम ने अपने 22 वर्षीय साले बिन कासिम को एक बड़ी सेना देकर आक्रमण के लिए भेजा, वहीं आलौर के इस लड़ाई के मैदान पर आठ दिन तक घमासान लड़ाई हुई और अंत में राजा दाहिर का पलड़ा भारी चल रहा था। इसी लड़ाई के मैदान के किनारे पर एक भव्य मंदिर पर केसरिया झंडा फहराता रहता था। आठवें दिन की लड़ाई की समाप्ति पर रात को इसी मंदिर के पुजारी मनसुख और हरनंदराय रात के अंधेरे में पैसे के लालच में कासिम से मिले और उसे उसकी विजय की एक युक्ति बताई कि वे मंदिर का ध्वज उतार देंगे तो अगले दिन हिंदू सेना भाग खड़ी होगी। उन्होंने वैसा ही किया। जब प्रातः हिंदू सेना को मंदिर का ध्वज नहीं दिखाई दिया तो अपनी हार मानकर भाग खड़ी हुई। नतीजतन, राजा दाहिर का सिर कलम कर दिया गया और फिर इसी दाहिर राजा के ब्राह्मण मंत्री ज्ञानबुद्ध ने पैसे के लालच में कासिम को गुप्त खजाने का रास्ता बताया जो 4 बड़े देगों में उस समय 72 करोड़ के सोना–चांदी तथा हीरे जवाहरात का खजाना मिला। लेकिन इस मंत्री और पुजारियों को कासिम ने बाद में मौत की सजा दी। लेकिन जो भी हो, इस लड़ाई की हार का कारण एकमात्र अंधविश्वास था और यह लड़ाई भारतवर्ष की गुलामी की पहली चकबंदी साबित हुई।

इसी प्रकार इसके बाद सन् 1026 में मोहम्मद गजनी गुजरात के सोमनाथ मंदिर को लूटने के लिए आया तो उसके एक ब्राह्मण सेनापति तिलम ने उसे पूरा रास्ता दिखलाया। उस समय गुजरात पर राजा भीमदेव का राज था। राजा नाम से भीमदेव था, लेकिन वह एक भीरू और अंधविश्वासी था, जिसने मोहम्मद गजनी को मंदिर को न लूटने की प्रार्थना की और बदले में धन दौलत देने की पेशकश की। जिस पर गजनी ने कहा कि मूर्ति भजंक है, जिसका फैसला उसकी तलवार करती है। इस पर मंदिर के मुख्य पुजारी ने राजा से कहा कि मंदिर में प्रवेश करते ही शिवलिंग की शक्ति से गजनी की सेना अंधी हो जाएगी। लेकिन वही हुआ, जो अंधविश्वास में होता है कि गजनी ने मंदिर में स्थापित आठ फुट ऊंचे शिवलिंग को तोड़कर उससे निकले सोना–चांदी, हीरे जवाहरात आदि लूटकर पूरे मंदिर को जी भरकर लूटा तथा जाते समय उस मंदिर के किवाड़ भी ऊंटों पर लाद ले गया। यह सारा कारनामा अंधविश्वास का था, जो गजनी का एक बाल भी बांका नहीं कर पाया। यह भारतवर्ष की गुलामी की दूसरी चकबंदी थी।

ऐसे बहुत से ऐतिहासिक उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिसके कारण हमारा देश गुलाम हुआ और यहां की जनता हजारों साल तक लुटती–पिटती रही। इसी अंधविश्वास के चलते देश के विभिन्न मंदिरों में अपार सोना–चांदी व हीरे जवाहरात इकट्ठे होते रहे जिसने विदेशियों को ललचाया और भारत पर एक के बाद एक ताबड़तोड़ हमले होते रहे और पूरा भारतवर्ष गुलाम होता चला गया। इसी अंधविश्वास का वर्तमान में जीता–जागता प्रमाण केरला का श्रीपद्मनाभस्वामी मंदिर है, जिसमें अरबों रुपए की संपत्ति पर पुजारी कुंडली मारे बैठे रहे।

जिस गति से हमारे देश में शिक्षा का प्रचार हो रहा है, उससे अधिक गति से देश में अंधविश्वास फैल रहा है। इसी का

जो अपना चित्र मुझमें लगा देते हैं, वे मेरी कृपा से संसार के सभी दुःखों से पार हो जाते हैं। –श्री कृष्ण

परिणाम है कि आज देश में डेरे और तथाकथित भगवान फल–फूल रहे हैं, जिनको सफेदपोशें का पूरा संरक्षण प्राप्त है, क्योंकि यह डेरे उनके वोट बैंक भी बन चुके हैं। नतीजतन, देश की अंधविश्वासी जनता दिन–रात इधर से उधर शांति, स्मृद्धि व गुरुनामे के चक्कर में सड़क दुर्घटनाओं में रोजाना मर रही है। पाखंडी और गुरूडम फल–फूल रहा है और देश को गर्त की तरफ धकेल रहा है। समाचार पत्र तथा टीवी चैनल वही परोस रहे हैं, जिससे उनकी आमदनी बढ़े चाहे देश जाए भाड़ में।

जहां तक भ्रष्टाचार की बात है, उसका मूल कारण भी अंधविश्वास ही है। क्योंकि जहां प्रतिदिन करोड़ों रूपए देवी–देवताओं को मंदिरों में इस मांग की शर्त पर चढ़ाए जा रहे हैं कि देवी–देवता उनकी इच्छा पूरी करेंगे। कहने का अर्थ है कि पहले देवताओं को रिश्वत का लालच दो और फिर उनसे अपना मनचाहा कार्य करवाओ। कोई भी कार्य अपने समय के अनुसार होता ही है, लेकिन उसका पूरा श्रेय देवी–देवताओं का होता है और इसी का उदाहरण है कि तिरूपति मंदिर में एक दिन में प्रथम अप्रैल, 2012 को पांच करोड़ 73 लाख रूए का चढ़ावा आया जब हम भगवान और देवी–देवताओं को इस प्रकार का लालच एवं रिश्वत देते हैं और वे सहर्ष स्वीकार करते हैं, तो फिर रिश्वत देने में मनुष्य का कौनसा दोष है? और फिर यही लोग कहते हैं मनुष्य को तो भगवान ने ही बनाया है। इसीलिए भ्रष्टाचार स्पष्ट तौर पर अंधविश्वास से जुड़ा है, इसीलिए अन्ना हजारे तथा स्वामी रामदेव से हम प्रार्थना करते हैं कि पहले ये इस देश से अंधविश्वास को भगाएं, भ्रष्टाचार तो फिर अपने आप ही भाग जाएगा। इसके साथ उनसे यह भी प्रार्थना करते हैं कि जब–जब जाट आरक्षण आंदोलन की बात आती है, तो वे अपने आंदोलन को खड़ा करके जाट आंदोलन को पीछे धकेलने का कार्य न करें। इसके पीछे क्या षडयंत्र हो सकता है, यह बात तो वही जाने, लेकिन यह बात अवश्य है कि ये दोनों ही महापुरूष पिछड़ी जाति से संबंध रखते हैं।

इसी प्रकार हम जानते हैं कि हमारे देश की मूल समस्या अधिक जनसंख्या है, जो अनेक समस्याओं की जड़ है, का कारण भी अंधविश्वास ही है क्योंकि हम मानकर चलते हैं कि भगवान ने जिसको चोंच दी है, उसे चुग्गा भी वही देगा।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 02.03.93)24.7/5'2" Passed Staff Nurse (GNM) Course. Employed in a reputed hospital at Zirakpur. Avoid Gotras: Doriwal, Lakhlan, Beniwal. Cont.: 09023265894
- SM4 employed Jat Girl (DOB August 1991) 26/5'2" B.Com, MBA, B.Ed. Knows car driving. Father retired, mother teacher Avoid Gotras: Malik, Lohan. Cont.: 09416367647, 09416203233
- SM4 Jat Girl (DOB 01.06.89) 28.4/5'3" M.Sc. Bio-technology from P.U. Doing Ph.D. Avoid Gotras: Tomar, Chhikara. Cont.: 09991192846
- SM4 Jat Girl (DOB 04.05.90)27.5/5'3" MCA, B.Ed. Maths. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Dangi. Cont.: 09813776961
- SM4 Jat Girl (DOB 08.09.91) 26/5'5" BA, Doing HRM. Father Army Officer. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Pawar. Cont.: 08146962977
- SM4 Jat Girl (DOB 26.07.94) 23.3/5'5" B. Tech, Dong MBA. Father Army Officer. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Pawar. Cont.: 08146962977
- SM4 Jat Girl (DOB March 89)28.6/5'3" MCA fom P.U. Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 09988359360
- SM4 Jat Girl 24/5'8" M.A. English Knowledge of Short Hand Typing. Avoid Gotras: Malik, Sangwan, Dahiya. Cont.: 09217884178
- SM4 Jat Girl (DOB10.05.84)23.5/5'2" B.P.T. Employed as Physiothrepist in Semi-Govt. Hospital at Panchkula. Avoid Gotras: Bains, Durka. Cont.: 09815078800, 09882249898
- SM4 Jat Girl (DOB 23.12.91)25.10/5'4" B.Com. Hons, MBA Employed as P.O. in ICICI Bank Pune. Avoid Gotras: Bijarnia, Jakhar. Cont.: 09023093808
- SM4 Jat Girl (DOB 13.09.92)25/5'3" B.Sc (Computer Sccience), M.Sc math with Computer Science from MDU.Rohtak, B.Ed. from Punjabi University. Father is Block Officer in Forest Deptt. at Pinjore. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhattarwal. Cont.: 08901273699, 08901273698
- SM4 Jat Girl 27/5'3" B.Com, MBA (Finance) Employed in MNC, Mohali. Avoid Gotras: Saroha, Phaugat, Sehrawat. Cont.: 09888462399
- SM4 Jat Girl 27/5'7" BDS, Pursuing for MDS Father Retired Army Officer. Avoid Gotras: Narwal, Mor, Kadyan. Cont.: 08556074464
- SM4 Jat Girl DOB (18.10.84) 33/5'3" B.Com, M.Com from Kurukshetra University, Computer Course in Financial Accounting & Honours Diploma in Computer Application. Doing job as Accountant of Share Market (BSE) at Panchkula. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442, 08427098277
- SM4 Jat Girl DOB 1990 27/5'7" Post Graduate, Employed at Chandigarh. Only well settled family with urban background, preferably in Tricity. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 29.06.90) 27/5'3" Graduated from Shri Ram College of Commerce, Delhi. Employed as India Brand Manager for Swift in Maruti India Pvt. Ltd. Delhi. Earning 14 LPA. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Rathee, Dahiya, Lamba. Cont.: 09988099453
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 29/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 13.06.90) 27/5'2" B.Tech (CSE) Employed as Assistant in Central Excise Department at Chennai. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 08.11.90) 26.10/5'3" Employed as Staff Nurse in Government Hospital, Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 25.10/5'5" B.A. LLB, (Hons) LLM, Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowery seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Malik,

Deswal. Cont.: 09417333298

- SM4 Jat Girl (DOB March1990) 27.5/5'7" Convent educated, Post Graduate, Employed, Highly educated family. Please contact only well educated family. Tricity (around Chandigarh) based family preferred. Avoid Gotras: Sura, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 working Jat Girl 26/5'3" BPT, MPT, CMT Employed as Consultant Chysiotheraphy in private hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. Cont.: 09467680428
- SM4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 25.8/5'5" M.Com, B.Ed. Employed as teacher in a private school at Zirakpur with Rs. 16000/- PM. Avoid Gotras: Kadyan, Jakhar, Malik. Cont.: 09815098264
- SM4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal. Cont.: 09467671451
- SM4 working Jat Girl 24.6/5'7" B.Tech, MBA, Preference Defence Officer. Avoid Gotras: Chhikara, Chhillar, Dalal, Tomar, Shokeen. Cont.: 09313662383, 09313433046
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.8/5'5" B.Com, MBA, MIS, M.A (Economics.) Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghasra. Cont.: 09463967847, 09463969302
- SM4 Jat Girl(DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Boy 26/6'2" B.Tech (Computer Science) Employed in I.T. Company (Presto) at Mohali with Rs. 6 lakh Package. Avoid Gotras: Bhanwala, Antil, Grewal. Cont.: 09466188502
- SM4 Jat Boy 28/5'10" Employed as Service Engineer in TATA Motors at Narela (Delhi). Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee. Cont.: 08950092430
- SM4 Jat Boy (DOB 14.11.92) 25/6' B.E. (Mechanical) Employed in BALCO (Bharat Alumy) KORBA as Assistant Manager. Father working as Junior Executive BALCO, Mother housewife. Only son. Avoid Gotras: Jhajariya, Pawadia, Jhanuwa. Cont.: 09416206610
- SM4 Jat Boy (DOB13.10.86) 31/6' B.Tech (ECE) Employed in Punjab Judicial Department. Avoid Gotras: Siwach, Dahiya, Suhag. Cont.: 09988005272
- SM4 Jat Boy (DOB 05.06.88) 29.2/5'11" Employed as Computer Programmer in Food & Supply Deptt. Kaithal. Familay settled in Kaithal. Six acre Agriculture land. Avoid Gotras: Ravish, Sheoran, Badu, Kala. Cont.: 09729867676
- SM4 Jat Boy 28/5'8" LLB, Practising Advocate, Own house, plot, flat, 3 acre agriculture land. Father Senior Advocate. Avoid Gotras: Balyan, Nehra. Cont.: 09996844340, 09416914340
- SM4 Jat Boy (DOB 16.08.88) 29/5'10" MA (Public Admn.) Employed as Govt. JBT Teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Dhillon, Siwach, Swag. Cont.: 09417424260
- SM4 Jat Boy (DOB1882)35/5'9" M. A. (Eng.) M.A Mass Communications, M.Phil mass communications and Ph.D mass communications from K.U.K. Working as Deputy Chief Reporter in Dainik Jagran with Rs.35000/- P.M. Father ex-serviceman, mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Gahlawat. Cont.: 09416616144
- SM4 Jat Boy (DOB 16.02.90) 27.4 /5'8" B.Tech. Mechanical. Employed in TATA Business Support Services Ltd. Mohali. Own house in Manimajra Town Chandigarh. Agriculture land and house in native village in District Hisar. Avoid Gotras: Kajla, Kaliramna, Khyalia. Cont.: 09915791810
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.91) 25.6/6'2" Employed as J.E. in Corporation Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Vigay, Rajan. Cont.: 0172-4185373
- SM4 Jat Boy 29/5'11" Employed as team leader in IT Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Khatri, Ohlyan, Rathee. Cont.: 09833286255, 09468463165
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 27/5'10" B. Tech. from India, M.Tech from Canada. Doing Job in TRONTO (Canada). PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula. Cont.: 08288853030
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy 30/5'9" B.Tech, MBA (UK) Marketing Manager, 60 lacks PA. Avoid Gotras: Tomar, Poriya. Cont.: 09412834119
- SM4 Jat Boy 30/5'10" MBA Working in MNC, CTC 14Lpa, Preferred B.Tech, MBA/Lecturer. Avoid Gotras: Panwar, Kadian, Dalal. Cont.: 09810280462
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.89) 27.6/5'10" B. Tech. Computer Engineering. Two flats and one showroom in Gurgaon. Father retired Principal. Avoid Gotras: Sheokand, Malik, Punia. Cont.: 09871044862
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Preference M.D.,MBBS match. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai Package Rs.10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188, 09560022263, 09416504181
- SM4 Jat Girl (DOB 30.09.1990) 27/5'5" Ph.D, (CSE) ME (CSE) PU. Highly educated family. Avoid Gotra : Malik, Saharan, Dhull. Cont.: 9872415151
- SM4 Boy (DOB 17.01.1992) 25/5'11" CA, B.Com & LL.b in PU. Slef employed. Void Gotra : Malik, Sahran, Dhull. Cont.: 9872415151
- Divorce Girl (DOB: 05.06.1983) 34/5'6" B.Sc, B.Ed, M.Sc, Services in Excise & Taxation Department. Avoid Gotra : Hooda, Malik, Darul. Cont.: 9915207127
- SM4 Jat Girl 23/5'3", M.Tech, working Assistant Professor University. Avoid Gotra: Jakhar, Dabas, Malik. Cont.: 9911912052
- SM4 Jat Girl 38/5'6", MBA, B.Tech, seek B.Tech MBA. Avoid Gotra : Balyan, Tomar. Cont.: 9411928640

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। –स्वामी विवेकानंद

'बेसहारा किसान' पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

जाट सभा चंडीगढ द्वारा 23 नवंबर को जाट भवन, चंडीगढ में 'बेसहारा किसान' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ सभा के माननीय अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा0 एम0एस0मलिक, आईपीएस (सेवा निवृत) द्वारा प्रतियोगी विद्यार्थियों को लेखन सामग्री वितरण करके किया गया ।

डा0 मलिक ने कहा कि इस प्रतियोगिता में चंडीगढ़, पंचकुला, मोहाली, हरियाणा के विभिन्न स्कूलों के व आसपास के विभिन्न स्कुलों के लगभग 400 विद्यार्थियों ने भाग लिया। उन्होंने ने कहा कि सभा द्वारा यह प्रतियोगिता हर वर्ष आयोजित की जाती है जिसके द्वारा छात्रों को पोस्टर/ड्राइंग में अपनी कला ज्ञान का प्रदर्शन करने के साथ-साथ राष्ट्र की एक ज्वलंत समस्या को अपने विवेक व प्रतिभा द्वारा उजागर करने का अवसर मिलता है। बच्चों में पोस्टर एवं पेटिंग विषय पर उनके बौद्धिक स्तर को बढ़ाने व विद्याार्थियों के प्रोत्साहन के लिए उनके शैक्षणिक स्तर व क्षमता के अनुसार प्रतियोगिता को तीन श्रेणियों - कक्षा तीसरी से पांचवी तक 'ए' कक्षा छटी से आठवी तक 'बी' व कक्षा नोवीं से बाहरवीं तक 'सी' में विभाजित किया गया। इसके साथ ही पुरस्कार की राशि को दोगुणा करने के इलावा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी विधार्थियों को आने-जाने का किराया भी दिया गया। प्रत्येक श्रेणी में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर्ता को क्रमशः 4200, 3000, 2200 रूपये का नकद पुरूष्कार व मैरीट सर्टीफिकेट प्रदान किया जाएगा। इसके इलावा प्रत्येक श्रेणी में 1000-1000 रूपये के तीन सांत्वना पुरूष्कार भी दिए जाएंगें। पुरूष्कार विजेताओं को बंसत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटुराम की 137वीं जयंती समारोह के अवसर पर 21 जनवरी 2018 को जाट भवन चंडीगढ़ में सम्मानित किया जाएगा।

इस प्रतियोगिता के पोस्टरों की छंटनी, चयन एवं परिणाम तैयार करने के लिए एक चयन समिति गठित की गई जिसमें गर्वमेंट आर्ट कॉलेज सैक्टर 10, चंडीगढ के सेवानिवृत प्रो0 इन्द्रजीत गुप्ता और इसी कॉलेज के सहायक प्रोफेसर श्री रवीन्द्र शर्मा व सहायक प्रोफेसर श्रीमति अनिता गुप्ता भी सम्मिलित थे। चयन समिति द्वारा निम्न प्रतियोगियों का पुरूष्कार हेतू चयन किया गया :-

श्रेणी-ए (कक्षा तीन से पांचवीं तक)

प्रथम विजेता - किरत, कक्षा 5वीं-सी, भवन विद्यालय (जूनियर), सैक्टर 33-डी, चंडीगढ़

द्वितीय विजेता - अमोदिता, कक्षा 5वीं-डी, सक्रेट हार्ट स्कूल, सैक्टर 26, चंडीगढ़

तृतीय विजेता - आरजू अहलुवालिया, कक्षा 5वीं, हंसराज पब्लिक स्कूल, सैक्टर 6, पंचकूला

सांत्वना पुरस्कार - आयमन, कक्षा 5वीं, अरबिन्दो स्कूल, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़

सांत्वना पुरस्कार - तनीशा शर्मा, कक्षा 5वीं-डी, हंसराज पब्लिक स्कूल, सैक्टर 6, पंचकूला

सांत्वना पुरस्कार - मुदीत जैन, कक्षा 5वीं-डी, भवन विद्यालय (जूनियर), सैक्टर 33-डी, चंडीगढ़

श्रेणी बी (कक्षा छटी से आठवीं तक)

प्रथम विजेता - अमीत, कक्षा 8वीं, राजकीय मॉडल हाई स्कूल, रामदरबार, चंडीगढ़

द्वितीय विजेता - अमीता, कक्षा 8वीं, राजकीय मॉडल सीनियर सैक्डरी स्कूल, सैक्टर 28-डी, चंडीगढ़

तृतीय विजेता - अन्वी, कक्षा 7वीं-सी, सक्रेट हार्ट स्कूल, सैक्टर 26, चण्डीगढ़

सांत्वना पुरस्कार - कृष्णा, कक्षा 8वीं, राजकीय मॉडल स्कूल, सैक्टर 33-बी, चंडीगढ़

सांत्वना पुरस्कार - रिदम जैन, कक्षा 8वीं-डी, भवन विद्यालय, सैक्टर 15, पंचकूला

सांत्वना पुरस्कार - दीक्षा मैगो, कक्षा 7वीं, सैन्ट मिलिनियम स्कूल, एचएमटी पिंजौर

सांत्वना पुरस्कार - अमीत कुमार, कक्षा 7वीं, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, सैक्टर 18, पंचकूला

श्रेणी-सी (कक्षा नोवीं से बाहरवीं तक)

प्रथम विजेता - ओम, कक्षा 11वीं, रा.सी.स. स्कूल, सैक्टर 45-ए, चंडीगढ़

द्वितीय विजेता - निकिता, कक्षा 10वीं, रा.मॉ.सी.सै. स्कूल, सैक्टर 28-डी, चंडीगढ़

तृतीय विजेता - सूरज, कक्षा 10वीं, रा.मॉ.हा. स्कूल, सैक्टर 32, चण्डीगढ़

सांत्वना पुरस्कार - वंसीका, कक्षा 10वीं-ए, रा.मॉ.सी.स. स्कूल, सैक्टर 15-सी, चंडीगढ़

सांत्वना पुरस्कार - अमन पाठक, कक्षा 9वीं, हालमार्क पब्लिक स्कूल, सैक्टर 15, पंचकूला

सांत्वना पुरस्कार - यश शर्मा, कक्षा 10वीं, रा.मॉ.हा. स्कूल, सैक्टर 41-डी, बढ़ेड़ी, चण्डीगढ़

डॉ. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत), प्रधान, जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा पोस्टर मेकिंग कम्पीटीशन के विजेता छात्रों को हार्दिक बधाई।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।